Date
Page

Q. Describe the Communist movement in China?

Ans:- 1917 ई० की रूस की बोल्शेविक क्रांति एक ऐसी घटना थी जिसका समस्त विश्व पर प्रभाव पड़ा। चीन पर इस क्रांति का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा। रूसी क्रांति की सफलता ने चीन के कुछ बुद्धिजीवियों में मार्क्सवाद के प्रति रूचि उत्पन्न की। पेकिंग के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुछ प्राध्यापकों और छात्रों ने 1919 ई० में मार्क्सवाद और साम्यवाद के अध्ययन के लिए एक संस्था की स्थापना की। इन्हीं व्यक्तियों में पुस्तकालय का एक कर्मचारी था जिसका नाम माओ त्से तुंग था। बुद्धजिवियों के इसी वर्ग ने 1919 ई० में ही चीनी साम्यवादी (कुंगचान तांग) दल स्थापित किया।

लगभग इसी समय पेरिस में पढ़नेवाले चीनी विद्यार्थियों ने चाउ-एन-लाई और ली-ली-सान के नेतृत्व में और जर्मनी में पढ़ने वाले छात्रों ने चुह-तेह के नेतृत्व में इस प्रकार के दल संगठित किए।

4 मई, 1920 को पेकिंग के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने मार्क्सवाद और साम्यवाद के अध्ययन के लिए 1919 ई० में स्थापित संस्था की पहली वर्षगाँठ बड़े धूम धाम से मनाई और एक समाजवादी युवक दल की स्थापना की। अंतराष्ट्रीय साम्यवादी संगठन कामिन्टर्न के कार्यकर्ता ग्रेगोरी बोइतिन्सकी ने इसके प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की और इस संगठन को कुंगचानतांग के साथ मिला दिया गया। अगले ही वर्ष पेकिंग, कैण्टन, शंघाई और हुनान प्रांतों में कम्युनिष्ट पार्टी की शाखाएँ कायम हो गई और जुलाई, 1921 में इन सब शाखाओं का प्रथम सम्मेलन शंघाई में हुआ। विदेशी आधिपत्य से मुक्ति दिलाना सम्मेलन का लक्ष्य घोषित किया गया।

साम्यवादी विचारधारा ने चीन के उदारवादी राष्ट्रवादीयों को भी प्रभावित किया। इस समय चीन में जो राष्ट्रवादी सरकार थी उसका नेता डॉ० सनयात सेन था। चीन के

नवनिर्माण के कार्य के प्रति पश्चिमी देशों के उदासीन रुख के कारण वह सोवियत संघ की नई कम्युनिष्ट सरकार की ओर आकृष्ट हुआ। अगस्त, 1921 में चीनी कम्युनिष्ट पार्टी की बैठक के लिए नियुक्त कामिन्टर्न के प्रतिनिधि ~~पार्टी बैठक~~ मेरिंग से सनयात सेन की मुलाकात हुई। इस मुलाकात का गहरा असर सनयात सेन पर पड़ा और उसने यह मान लिया कि साम्यवादी विचारधारा ही शोषित जनता के लिए सबसे मददगार सिद्ध हो सकती है। अतएव उसने सोवियत संघ से सतर्क बढ़ाना शुरू किया और वहाँ से बहुत से सलाहकार चीन आए जिन्होंने कोमिन्तांग पार्टी और चीन सेना का पुनर्गठन किया।

इन दिनों कोमितांग और कुंगचानतांग में सोवियत प्रभाव के कारण काफी तालमेल रहा। परंतु, चीनी कम्युनिस्ट अपने संगठन को सुदृढ़ करने के लिए भी सक्रिय रहे। वे किसानों और मजदूरों के बीच काम करते रहे और उन्हें संगठित करते रहे। शंघाई के कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर पर मजदूरों का संघ बनाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया। एक मजदूर संगठन कायम हुआ जिसमें शुरू में अधिकतर जहाजी मजदूर थे। 1921 ई० के अंत में इस संघ ने वेतन-वृद्धि की माँग को लेकर हड़ताल की और वेतन में 20 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त की।

कम्युनिस्ट किसानों को भी संगठित करने लगे। सितम्बर, 1922 में किसान नेता फेंग पांग ने किसानों के पाँच सौ संघ बनाए और 1923 ई० में हाइफेंग किसान-संघ बना जिसके सदस्यों की संख्या एक लाख तक पहुँच गई। 1923 ई० तक किसानों के संगठन काफी मजबूत हो गए तथा वे लगान में कमी और

जमींदारी - उन्मूलन की माँग करने लगे। 1925 ई० में सनयात सेन की मृत्यु के तुरंत बाद माओत्से-तुंग ने हूनान में एक शक्तिशाली किसान आंदोलन चलाया जिसने जमींदारों को उखाड़ फेंका और पुजारी-पंडों की सत्ता को चुनौती दी।

डॉ० सनयात सेन की मृत्यु के बाद कम्युनिस्टों और कोमिन्तांग दल के बीच सम्बन्ध कटु होने लगे। नए नेता च्यांग काई शेक की कोई सहानुभूति कम्युनिस्टों के साथ नहीं थी। कोमिन्तांग पार्टी का नेता बनते के तुरंत बाद उसने सभी कम्युनिस्टों को पार्टी के महत्वपूर्ण पदों से निकाल दिया, यद्यपि उसने कुछ दिनों तक कोमिन्तांग और कम्युनिस्ट पार्टी के महत्वपूर्ण पदों से निकाल दिया, यद्यपि उसने कुछ दिनों तक कोमिन्तांग और कम्युनिस्ट पार्टी के आपसी समझौते को कायम रखा। कोमिन्तांग और कम्युनिस्टों ने मिलकर 1926 ई० में मध्य और उत्तरी अभियान चलाया। कैण्टन से चलकर कोमिन्तांग और कम्युनिस्टों ने हैंको, शंघाई और नानकिंग पर 1927 ई० तक कब्जा कर लिया। शंघाई पर अधिकार औद्योगिक मजदूरों के विद्रोह के कारण हो पाया जिसका संगठन एक कम्युनिस्ट नेता-एन-लाई ने किया। नानकिंग पर कब्जा करने के क्रम में कम्युनिस्टों ने विदेशियों से दुर्व्यवहार किया और उनकी संपत्ति लूट ली। च्यांग काई शेक ने इस घटना को उसे बदनाम करने के षड्यंत्र के रूप में देखा। 1928 ई० में पेकिंग पर भी उनका अधिकार हो गया।

अप्रैल, 1927 तक च्यांग काई शेक को पूरा विश्वास हो गया कि कम्युनिस्ट बहुत शक्तिशाली होते जा रहे हैं। अतएव उसने कम्युनिस्टों के उन्मूलन का निश्चय किया। कोमिन्तांग पार्टी से सभी कम्युनिस्टों को निकाल दिया गया और एक कठोर-शुद्धिकरण आंदोलन चलाया गया जिसमें हजारों कम्युनिस्ट, ट्रेड यूनियनिस्ट और

किसान नेता मारे गए। एक अनुमान के अनुसार मारे गए लोगों की संख्या ढाई लाख थी। इस बीच जब कम्युनिस्टों च्यांग काई शेक 1930 ई० और 1934 ई० के बीच कम्युनिस्टों के विरुद्ध उन्मूलन अभियान पार्टी की रणनीति में परिवर्तन किया। उसने इस बात पर जोर दिया कि कम्युनिस्ट पार्टी को औद्योगिक मजदूरों की तुलना में किसानों के बीच जनसमर्थन प्राप्त करने के कोशिश करनी चाहिए। कारण यह कि चीन मूलत: एक कृषिप्रधान देश था जहाँ औद्योगिक क्रांति अभी अभी पिछड़ी हुई थी। 1932 ई० में माओ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष निर्वाचित हुआ और इसके बाद धीरे - धीरे उसने पार्टी के शीर्षस्थ तथा असल नेता के रूप में अपनी ख्याति ठोस बना ली।

उन्मूल अभियान के दौरान माओ और उसके समर्थक भागकर हुनान और कियांग्सी प्रांतों के मध्य की पहाड़ियों में चले गए। वहाँ माओ की अध्यक्षता (चेयरमैनशिप) में चीनी - सोवियत सरकार की स्थापना की गई और एक लाल सेना का गठन किया गया।

धीरे - धीरे कम्युनिस्टों ने पास-पड़ोस के क्षेत्रों पर भी कब्जा करना शुरू कर दिया। अपने अधिकृत क्षेत्रों में उन्होंने जमीन जमींदारों से छीनकर किसानों के बीच वितरीत किया। सिंचाई की समुचित व्यवस्था की, किसानों को खेती के नए तरीके समझाए, उद्योग - धंधों में काम करने वाले मजदूरों की मजदूरी बढ़ाई और उनके काम के घंटे में कमी की। इन सबसे कम्युनिस्टों की लोकप्रियता में काफी वृद्धि हुई। दुसरी ओर कोमन्तांग सरकार भ्रष्टाचार, अक्षमता और जमींदारों, उद्योगपतियों के समर्थक होने

के कारण दिन - प्रतिदिन बदनाम होती जा रही थी।
च्यांग काई शेक की सरकार ने साम्यवादियों के बढ़ते हुए प्रभाव का उन्मूलन करने और उनके द्वारा अधिकृत इलाके पर अपना अधिकार कायम करने के लिए 1933 ई० तक चार बड़े सैनिक अभियान किए परंतु विशेष सफलता नहीं मिल सकी। पाँचवाँ अभियान कारगर साबित हुआ। 1934 ई० के आरंभ तक कम्युनिस्टों के अड्डे को कोमिन्तांग सेना ने घेर लिया।
माओ ने निर्णय किया कि बचने का एकमात्र उपाय यही है कि कोमिन्तांग सुरक्षा पंक्ति को तोड़ते हुए कहीं और दुसरा अड्डा बनाया जाए। 1934 ई० के अक्टूबर महीने मे माओ को यह सफलता मिली और लगभग दस हजार कम्युनिस्ट ऐतिहासिक लम्बे अभियान पर रवाना हुए। उन्होने 368 दिन मे 6,000 मील लंबी दूरी पार की और बचे लोगों के साथ शेन्सी प्रान्त की येनान नामक जगह पर शरण ली माओ शेन्सी और कांशु प्रान्त की येनान नामक जगह पर शरण ली। माओ शेन्सी और कांशु प्रान्तो पर नियंत्रण करने और धीरे - धीरे अपनी स्थिति मजबूत करने मे सफल रहा।
अब तक चीन को जापानी विस्तारवाद के खतरे का सामना करना भी पड़ रहा था। जापान ने 1931 ई० में ही मंचुरिया पर कब्जा कर लिया था और उत्तरी चीन के पड़ोसी प्रान्तो को हड़पने की ताक में लगा हुआ था। जापानियों के बढ़ते हुए खतरे को देखते हुए कम्युनिस्टों ने कोमिन्तांग के समक्ष जापानियों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रस्ताव रखा। परंतु च्यांग जापानियों को रोकने के बजाय कम्युनिस्टों का सफाया करना अधिक महत्वपूर्ण मानता था। वह 1936 ई० में शेन्सी पहुँचा ताकि कम्युनिस्टों पर आक्रमण के काम की निगरानी रख सके।

परंतु यहां उल्लेखनीय घटना घटी। च्यांग को उसी के कुछ सैनिकों ने बंदी बना लिया। वे सैनिक मंचुरियन थे और जापान के विरुद्ध कार्यवाही के पक्षधर थे। च्यांग को कुछ दिनों के बाद रिहा कर दिया गया। सियान नामक स्थान पर एक प्रमुख कम्युनिस्ट नेता चाउएन-लाई च्यांग से मिला। दोनों पक्ष शत्रुता का परित्याग करने और जापानियों का सम्मिलित मुकाबला करने को राजी हो गए।

कोमिन्तांग सरकार के साथ की गई नई संधि से लाभ उठाकर कम्युनिस्टों ने शेन्सी में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। 1937 ई० में जापान के साथ व्यापक लड़ाई भड़कने पर जहाँ पर एक ओर कोमिन्तांग सैनिकों की भारी पराजय हुई और अधिकांश पूर्वी चीन पर जापान का कब्जा हो गया तथा च्यांग को पश्चिम में चंगकिंग की ओर पीछे हट जाना पड़ा, वहीं दूसरी ओर शेन्सी में डटे हुए कम्युनिस्टों ने उत्तर में जापान के विरुद्ध कारगर छापामार लड़ाई का नेतृत्व कर लोगों के सामने अपने को देशभक्त राष्ट्रवादी के रूप में प्रस्तुत किया। इस कारण उन्हें किसानों और मध्यवर्ग का भारी समर्थन मिला। 1937 ई० तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के 5 अड्डे थे और वे एक करोड़ बीस लाख लोगों पर नियंत्रण करते थे। कोमिन्तांग और कम्युनिस्टों के बीच समझौता अधिक दिनों तक बरकरार न रह सका। कोमिन्तांग नेता कम्युनिस्टों को संदेह की दृष्टि से देखते थे और युद्ध में उनकी सक्रिय सहभागिता को केवल उत्तर-पश्चिम मोर्चा तक सीमित रखना चाहते थे। फलतः कटुता बढ़ी और 1941 ई० में दोनों पक्षों में क्यांगसी तथा फूकिन में स्थानीय स्तर पर संघर्ष भी हुए।

अब तक द्वितीय महायुद्ध आरंभ हो चुका था। 1941ई० में जापानी सेना के पर्ल हार्बर पर आक्रमण ने युद्ध को नया रूप दिया। जापान की पूर्वी और दक्षिणी - पूर्वी एशिया में निरंतर मिल रही विजय ने सामरिक रणनीति में चीन के महत्व को बढ़ा दिया। मित्रराष्ट्रों ने चीन को जापान के विरुद्ध भारी मदद देना आरंभ किया। अमेरिका और ब्रिटेन ने चीन से संधि कर राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों तथा विशेषाधिकारों का परित्याग कर दिया और उसे समान राष्ट्र का दर्जा दिया। जापान के विरुद्ध चीनी प्रतिरोध को मजबूत बनाने के लिए अमेरिका ने कोमिन्तांग और कम्युनिस्टों में समझौता का भी प्रयास भी किया जो असफल रहा। अगस्त, 1945 में जापान के आत्मसमर्पण के बाद द्वितीय विश्वयुद्ध का अंत हो गया। किन्तु, महायुद्ध की समाप्ति के ~~बाद~~ साथ ही कोमिन्तांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी सत्ता के लिए अंतिम संघर्ष मे उलझ गए। जापान की पराजय के कारण नानकिंग की उस सरकार का स्वयं ही अंत हो गया, जो वांग - चिंग - वेई के नेतृत्व में जापानियों ने स्थापित की थी। अब यह प्रश्न उठा कि नानकिंग द्वारा अधिकृत प्रदेशों पर किसका अधिकार हो। अमेरिका आदि मित्रराष्ट्रों की सहानुभूति च्यांग के साथ थी जबकि रूस की सहानुभूति कम्युनिस्टों के साथ थी।

परंतु संघर्ष में कम्युनिस्टों का पलड़ा भारी रहा। दो साल के संघर्ष के बाद कम्युनिस्टों ने मंचूरिया की कुंजी मुकदेन को जीत लिया। तदुपरांत वे दक्षिण की ओर मुड़े और तेजी से पीकिंग, तीनसिन, नानकिंग और शंघाई पर कब्जा कर लिया। धीरे - धीरे च्यांग काई शेक का पक्ष कमजोर पड़ता गया और अंत में चीन की मुख्य भूमि से भाग कर उसे अमेरिका के संरक्षण में फारमोसा जाना पड़ा। विजयी कम्युनिस्टों ने अक्टूबर, 1949 को

पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना की घोषणा की। माओत्से तुंग चेयरमैन और चाऊ-एन लाई प्रधानमंत्री बने।

(2) कम्युनिस्टों की सफलता के कारण

यह अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि बेहतर संसाधनों और उन्नत अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सेना के होने के बावजूद राष्ट्रवादी सरकार कम्युनिस्टों के मुकाबले पराजित हुई। परंतु कम्युनिस्टों के सफलता के कारण सर्वविदित है।

प्रथम, सबसे महत्वपूर्ण कारण कुओमिन्तांग की धीरे-धीरे कमजोर पड़ गई शक्ति थी। इसे जापानी आक्रमण का मुख्य भार सहना पड़ा और लम्बे संघर्ष ने राष्ट्रवादी सरकार को आर्थिक रूप से जर्जर तथा सैन्य दृष्टि से कमजोर बना दिया। दूसरी ओर कम्युनिस्ट सेना की शक्ति बरकरार रही।

द्वितीय, संघर्ष के अंतिम दौर में च्यांग ने कुछ भारी सामरिक भूलें की। हिटलर की तरह वह सेना को पीछे हटने का आदेश नहीं दे पाता था और फलतः उसकी बिखरी हुई सेना दुश्मनों से घिर जाती थी। पेकिंग और शंघाई में पूर्ण रूप से घबड़ाई हुई उसकी सेना को बिना किसी विरोध के समर्पण करना पड़ा।

तृतीय, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के चालाक नेताओं जैसे माओत्से तुंग और चाउ-एन-लाई ने कोमिन्तांग सरकार की कमजोरियों का लाभ उठाया। कम्युनिस्ट नेता पूरी तरह समर्पित और प्रतिबद्ध थे। लिन पिआओ चू तेह और चेन जी जैसे कम्युनिस्ट सेनापतियों ने सतर्कतापूर्वक सेना को तैयार किया और वे अपने कोमिन्तांग प्रतिरूपों की तुलना में कहीं अधिक सक्षम और राजनीतिज्ञ थे।

Date
Page

चतुर्थ, कम्युनिस्ट सेना अत्यन्त अनुशासित और कम्युनिस्ट प्रशासन ईमानदार तथा निष्पक्ष था। कम्युनिस्ट सेना आदर्शवाद से प्रेरित थी। वह न तो नागरिकों को लूटती और न औरतों से दुर्व्यवहार करती थी। इससे लोग कम्युनिस्टों से प्रभावित थे।

इसके विपरीत कोमिन्तांग सेना अपने कम वेतन की पूर्ति देहातों मे लूटपाट करके करती थी। कोमिन्तांग शासन आयोग्य और भ्रष्ट था। अधिकांश अमेरिकी सहायता धन अधिकारियों की जेब में चला जाता था। युद्ध के दौरान भयंकर मुद्रास्फीति हुई जिसमे सामान्य जनता की कठिनाइयाँ कई गुना बढ़ गई और मध्यवर्ग बर्बाद हो गया। फलत: कोमिन्तांग से उसका मोहभंग हो गया।

पंचम, कोमिन्तांग आम जनता को अविश्वास की दृष्टि से देखते थे और भूमिपतियों तथा संपत्तिशाली वर्ग के समर्थन खोते गए। दूसरी ओर कम्युनिस्टों ने किसानों और आम जनता के बीच जमकर काम किया तथा उन्हें अपना समर्थक बना लिया।

इस प्रकार, हम देखते है कि उपर्युक्त कारणों से कम्युनिस्ट सफल रहे और उन्होने सत्ता पर नियंत्रण प्राप्त किया।